बुंदेलखंड का स्थापत्य

drishtiias.com/hindi/printpdf/bundelkhand-architecture

- इसे खजुराहो उपशैली भी कहा जाता है।
- यह उपशैली 10वीं से 13वीं शताब्दी के बीच रही जिसे चंदेल शासकों ने पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया।
- यहाँ मंदिर निर्माण में पन्ना खदान के स्थानीय गुलाबी व मटमैले ग्रेनाइट एवं लाल बलुआ पत्थर का इस्तेमाल हुआ है।
- खजुराहो उपशैली के मंदिरों में परकोटे का पूर्ण अभाव है यानी मंदिर चहारदीवारी में नहीं हैं।
- 'उरुश्रृंग' व 'अंतराल' बुंदेलखंड स्थापत्य की अपनी विशेष पहचान है।
- शिखर के ऊपर निकली हुई मीनारनुमा आकृति को 'उरु श्रृंग' कहते हैं तथा गर्भगृह और बरामदे के बीच के लंबे गलियारे को 'अंतराल' कहते हैं।
- मंदिर की प्रतिमाओं में देवता एवं देवी, अप्सरा के अलावा संभोगरत प्रतिमाएँ तथा पशुओं की आकृतियाँ हैं।
- खजुराहो के पश्चिमी समूह में लक्ष्मण, कंदरिया महादेव, मतंगेश्वर, लक्ष्मी, जगदम्बा, चित्रगुप्त, पार्वती तथा गणेश मंदिर और वराह व नंदी के मंडप शामिल हैं।
- खजुराहो के पूर्वी समूहों के मंदिरों में ब्रह्मा, वामन, जवारी व हनुमान मंदिर और जैन मंदिरों में आदिनाथ, पार्श्वनाथ, आदिनाथ घंटाई मंदिर शामिल हैं।
- खजुराहो के मंदिरों को यूनेस्को की विश्व विरासत सूची में स्थान प्राप्त है।
- खजुराहो के समस्त मंदिरों में कला-तकनीक, निर्माण प्रक्रिया, भव्यता आदि की दृष्टि से कंदरिया महादेव मंदिर को सर्वोत्तम आँका गया है।